Name :- Soni kumari
Class :- B.A II year
Deptt :- Sanskrit

मृच्छकटिकम्

विदूषक का चरित्र

मृच्छकटिक का विदूषक मैत्रेय है। यह जाति का ब्राह्मण तथा चारुदत्त का नर्मसचिव ही नहीं घनिष्ठ मित्र भी है। संस्कृत के अन्य नाटकों की तरह मृच्छकटिक के विदूषक की स्थिति केवल हास्योत्पादन के लिए ही नहीं है पर उसकी आत्मसंस्कृति और उसके व्यक्तित्व का एक महत्वपूर्ण अंग है।

मैत्रेय चारुदत्त का सच्चा मित्र है। चारुदत्त की दरिद्रावस्था में भी वह उसका साथ नहीं छोड़ता। इधर-उधर अपनी उदरपूर्ति करता हुआ चारुदत्त की सच्चा सहायता करता है। इसी हेतु चारुदत्त उसके प्रति कहता है "अये सर्वकालमित्रं मैत्रेयः प्राप्तः"। वह चारुदत्त को आश्वासन देता है — "भो वयस्य [illegible] सन्तापितेन"। वह चारुदत्त को किसी प्रकार का कष्ट पहुँचने देना नहीं चाहता इसी कारण रदनिका से कहता है कि अपने अपमान की बात चारुदत्त से न कहना। वह चारुदत्त को गणिका-प्रसङ्ग से दूर रखना चाहता है। वह जानता है कि वेश्या मायावी और कुटिल होती है। अतएव वह वसन्तसेना को भी घृणा की दृष्टि से देखता है और चारुदत्त से कहता है "निवर्त्यतामात्मा अस्माद् बहुप्रत्यवायात् गणिकाप्रसङ्गात्"।

वह चारुदत्त से बहुत प्रेम करता है। जब शकार ने चारुदत्त पर मिथ्या आरोप लगाया था तो वह न्यायालय में शकार से लड़ बैठता है। जब चारुदत्त के मृत्युदण्ड की घोषणा की जाती है तो वह चारुदत्त के बिना जीवित नहीं रहना चाहता। वह स्वभाव से बड़ा ही विनोदी है। हँसी मजाक खूब करना जानता है। वह थोड़ा डरपोक भी है और [illegible] भी है। [illegible] के अपमान को देखकर वह शकार और विट को मारने के लिए उद्यत हो जाता है।

मा दुर्गत इति परिभवो नास्ति कृतान्तस्य दुर्गतो नाम।
चारित्र्येण विहीनो आढ्योऽपि च दुर्गतो भवति॥

नवम अङ्क में वह न्यायालय में शकार का [illegible]

हो जाता है, यद्यपि क्रोध का बुरा परिणाम होता है क्योंकि मारपीट में उसकी कांख से आभूषण निकल पड़ते हैं। धर्म के प्रति उसकी उतनी आस्था भी नहीं है। देवी-देवताओं की पूजा के प्रति उसकी यत्र-तत्र हल्की अनास्था प्रकट होती है। नैतिकता की अपेक्षा व्यावहारिकता में उसे विश्वास है। वसन्तसेना के चोरी गये अल्पमूल्य आभूषण के बदले धूता का बहुमूल्य रत्नहार वह नहीं देना चाहता है। वसन्तसेना चारुदत्त के घर में आभूषण रखती ही नहीं यह कहने में भी उसे हिचक नहीं होती है। वह भीतर से डरपोक है। वह अन्धेरे में अकेले चतुष्पथ पर जाने से इन्कार करता है। रदनिका को साथ लेकर ही वह बाहर निकलता है। कभी-कभी वह मूर्ख सा प्रतीत होता है। जब वसन्तसेना चारुदत्त के प्रति अभिसरण करती है तो वह चेटी से पूछता है कि तुम यहाँ इस अन्धेरी रात में किस लिए आई हो। वसन्तसेना की समृद्धि को देखकर वह चेटी से प्रश्न करता है — भवति, किं युष्माकं यानपात्राणि वहन्ति। उसके इस प्रकार के कथन व्यंग्यपूर्ण से प्रतीत होते हैं तथा हास्य की उद्भावना करते हैं।

इस प्रकार विदूषक में उच्चकोटि की बुद्धि नहीं है और न ही मनुष्य को परखने की शक्ति है। वह उदात्त गुण वाला तथा व्यवहारिक व्यक्ति है। यही मैत्रेय का व्यक्तित्व है।

Name :- Sani Kumari
Class - B.A III year
Deptt. - Sanskrit

समास

लघुसिद्धान्तकौमुदी के अनुसार समास पाँच प्रकार के हैं।

(i) समास का शाब्दिक अर्थ है - संक्षेप। अनेक पदों का परस्पर मिलकर एक पद बन जाना ही समास है।

समास के पाँच प्रकार हैं —

(i) केवल समास (ii) अव्ययीभाव समास (iii) तत्पुरुष समास (iv) ~~तत्पुरुष~~ बहुव्रीहि समास (v) द्वन्द्व समास कर्मधारय, द्विगु

1) **केवल समास** - विशेषसंज्ञाविनिर्मुक्तः केवलसमासः - विशेष नाम से रहित केवल समास होता है।

(2) **अव्ययीभाव समास** — प्रायेण पूर्वपदार्थप्रधानोऽव्ययीभावो द्वितीयः जिसमें प्रायः पूर्व पद के अर्थ की ही प्रधानता हो, उसे अव्ययीभाव समास कहते हैं। जिसका पहला पद अव्यय (उपसर्ग या निपात) प्रधान हो वही अव्ययीभाव है। इसमें दूसरा पद संज्ञारूप होता है। समस्त पद नपुंसकलिंग होता है।

उदा० - नगरस्य समीपम् = उपनगरम्

(3) **तत्पुरुष समास** :- प्रायेणोत्तरपदार्थप्रधानस्तत्पुरुषस्तृतीयः। जिसमें प्रायः उत्तर पद का अर्थ प्रधान हो वह तत्पुरुष समास होता है। जैसे गङ्गायाः जलम् = गङ्गाजलम्। वक्ता के - गङ्गाजलम् आनय इस वाक्य से जल लाने के आदेश का बोध होता है, न कि गङ्गा को लाने का। इसलिए उत्तर पद (जल) की प्रधानता के कारण यह तत्पुरुष समास है।

तत्पुरुष समास का एक भेद कर्मधारय है। इसमें विशेष्य एवं विशेषण में समास होता है। जैसे - पक्वान्नम् (पक्वं च तद् अन्नं च = पका अन्न) यहाँ पका विशेषण और अन्न विशेष्य। इन दोनों में समास होने से यह कर्मधारय है।

कर्मधारय का एक भेद द्विगु है। इसमें संख्या वाचक विशेषण और विशेष्य में समास होता है। जैसे - सप्तगङ्गम् - सप्तानां गङ्गानां समाहारः (सात गंगाओं का समूह) यहाँ विशेषण सात संख्यावाचक है। अतः द्विगु समास है।

(4) बहुव्रीहि समास :- जिस समास में प्रायः अन्य पद (न पूर्व पद और उत्तर पद) का अर्थ प्रधान होता है वह बहुव्रीहि समास होता है।
उदा० - आयतललाटः - विस्तृत ललाट वाला। यहाँ आयत और ललाट - इन दोनों से भिन्न व्यक्ति अर्थ प्रधान है। अतः अन्य पदार्थ (व्यक्ति) की प्रधानता के कारण यह बहुव्रीहि समास है।

(5) द्वन्द्व समास :- जिसमें प्रायः दोनों पदों का अर्थ प्रधान होता है उसे द्वन्द्व समास कहते हैं।
जैसे - भीमार्जुनौ (भीम और अर्जुन) यहाँ दोनों पदों का अर्थ प्रधान होने से द्वन्द्व है।

तत्पुरुष समास

सूत्र ⇒ द्वितीया श्रितातीतपतितगतात्यस्तप्राप्तापन्नैः ॥

व्याख्या :- प्रस्तुत सूत्र लघुसिद्धान्त कौमुदी के समास प्रकरण के अन्तर्गत तत्पुरुष समास का विधायक सूत्र है। सूत्र से पूरे सूत्र का अर्थ प्रतीत नहीं होता है अतः अर्थ की प्रतीति के लिए प्राक्कडारात् समासः से समास, सह सुपा और तत्पुरुषः की अनुवृत्ति करते हैं इस प्रकार इस का अर्थ है — द्वितीयान्त पद का श्रित, अतीत, पतित, गत अत्यस्त, प्राप्त और आपन्न - इन प्रातिपदिकों से बने सुबन्तों के साथ विकल्प से समास होता है और उसकी तत्पुरुष संज्ञा होती है। जैसे - कृष्णं श्रितः (कृष्ण के आश्रित) में द्वितीयान्त कृष्ण शब्द का श्रित के साथ समास होने पर सु विभक्ति आदि लगने पर कृष्णश्रितः रूप बनता है।

उच्चारण स्थान

Name :- Soni Kumari
class :- B.A II year
Deptt :- Sanskrit

हृदय से निकली हुई प्राणवायु हमारे मुख में उपस्थित ध्वनि यन्त्रों (कण्ठ, तालु, ओष्ठ आदि) से टकराती है और विभिन्न ध्वनियों की सृष्टि करती है। जिस स्थान को यह प्राणवायु स्पर्श करती है वही वर्ण विशेष का उच्चारण स्थान है।

1. अकुहविसर्जनीयानां कण्ठः - अ, आ, कवर्ग और विसर्ग का उच्चारण स्थान कण्ठ है अतः ये कण्ठ्य है।
2. इचुयशानां तालु :- इ, ई, चवर्ग य और श का तालु स्थान है। ये तालव्य है।
3. ऋटुरषाणां मूर्धा - ऋ, ॠ, टवर्ग, र और ष का मूर्धा स्थान है ये मूर्धन्य है।
4. लृतुलसानां दन्ताः - लृ, लृ, तवर्ग, ल और स का दन्त स्थान है ये दन्त्य है।
5. उपूपध्मानीयानाम् ओष्ठौ - उ, ऊ, पवर्ग उपध्मानीय अर्थात् ⌣प ⌣फ का ओष्ठ स्थान है ये ओष्ठ्य है।
6. ञमङणनानां नासिका च - ञ, म, ङ, ण और न का नासिका स्थान है अतः ये अनुनासिक वर्ण है।
7. एदैतोः कण्ठ तालु - ए और ऐ का कण्ठ तालु स्थान है।
8. ओदौतोः कण्ठोष्ठम् - ओ और औ का कण्ठ - ओष्ठ्य स्थान है।
9. वकारस्य दन्त्योष्ठम् - व का दन्त ओष्ठ स्थान है।